Popular Article

Indian Veterinary Magazine
a monthly Magazine
of the people, by the people, for the people

Vol 2 Issue 7 July 2026, 806-812 ISSN:3108-1398

बकरियों के बच्चों का रख-रखाव

अक्षत कौशिक[1], यजुवेंद्र सिंह[1], रजनीश सिरोही[1], अंकुर पाण्डेय[2], अरुंधति शर्मा[1], आकांक्षा देथा[1]

[1]पशुधन उत्पादन प्रबंधन विभाग, [2]पशु शरीर रचना विज्ञान विभाग
पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय,
दुवासु, मथुरा

doi.org/10.5281/indianVetMagazine.21318326

मुख्य बिंदु (Key Points)

- बकरी के बच्चों की स्वस्थ वृद्धि और कम मृत्यु दर के लिए जन्म के तुरंत बाद खीस पिलाना, संतुलित पोषण, समय पर दूध एवं दाना देना तथा वैज्ञानिक प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है।
- स्वच्छ आवास, उचित बिछावन, आयु के अनुसार पर्याप्त स्थान तथा नियमित रोग-निवारण उपाय बच्चों को निमोनिया, दस्त, काक्सीडियोसिस एवं अन्य रोगों से सुरक्षित रखते हैं।
- वैज्ञानिक पालन-पोषण, नियमित स्वास्थ्य देखभाल और संतुलित आहार अपनाने से बच्चों की वृद्धि दर, भविष्य की उत्पादन क्षमता और बकरी पालन की लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

सारांश (*Abstract*)

बकरी पालन की सफलता काफी हद तक बकरी के बच्चों के वैज्ञानिक पालन-पोषण पर निर्भर करती है। जन्म के बाद प्रारंभिक देखभाल, समय पर खीस (कोलोस्ट्रम) पिलाना, आयु एवं शारीरिक भार के अनुसार दूध, दाना और हरे चारे की संतुलित व्यवस्था बच्चों की वृद्धि, रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा भविष्य की उत्पादन क्षमता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वच्छ, सूखा और हवादार आवास, नियमित स्वच्छता, पर्याप्त स्थान तथा उचित बिछावन रोगों की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निमोनिया, दस्त, काक्सीडियोसिस एवं अन्य संक्रामक रोगों से बचाव के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन और समय पर पशुचिकित्सकीय देखभाल आवश्यक है। वैज्ञानिक पोषण, स्वास्थ्य संरक्षण एवं उचित आवास व्यवस्था अपनाकर बकरी के बच्चों की मृत्यु दर

को कम किया जा सकता है, उनकी वृद्धि दर में सुधार किया जा सकता है तथा बकरी पालन को अधिक लाभकारी और टिकाऊ बनाया जा सकता है।

भारत में बकरी पालन प्राचीन समय से किया जाता रहा है, किन्तु आज भी इससे अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता। इसका प्रमुख कारण बकरी के बच्चों के पालन-पोषण एवं प्रबंधन पर पर्याप्त ध्यान न दिया जाना है। बच्चों की वृद्धि दर अपेक्षाकृत कम रहती है तथा उनकी मृत्यु दर भी अधिक होती है। यदि वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर बच्चों का उचित पालन किया जाए, तो मृत्यु दर में कमी लाई जा सकती है तथा उनकी शारीरिक वृद्धि को बढ़ाकर बकरी पालन को अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है।

बकरी के बच्चों के वैज्ञानिक पालन के तीन मुख्य आधार हैं–

1. बकरी एवं बच्चों का आहार प्रबन्ध
2. रोगों से सुरक्षा
3. उचित आवास व्यवस्था

बकरी का आहार प्रबन्ध

बच्चों की शारीरिक वृद्धि एवं स्वास्थ्य पर उनकी माता को गर्भावस्था तथा दुग्धकाल में दिए जाने वाले आहार का सीधा प्रभाव पड़ता है। गर्भावस्था के पाँचवें माह में भ्रूण का सर्वाधिक विकास होता है, इसलिए इस अवधि में बकरी को प्रतिदिन लगभग **55 ग्राम अतिरिक्त पाच्य प्रोटीन** की आवश्यकता होती है।

इसी प्रकार दुग्धकाल में प्रत्येक **एक किलोग्राम दूध उत्पादन** के लिए लगभग **50 ग्राम अतिरिक्त पाच्य प्रोटीन** आवश्यक होती है। इस अतिरिक्त आवश्यकता की पूर्ति दाने की मात्रा बढ़ाकर की जा सकती है।

दाने में लगभग **10-12 प्रतिशत पाच्य प्रोटीन** तथा **65-70 प्रतिशत कुल पाच्य पोषक तत्व (TDN)** होने चाहिए। सामान्यतः अनाजों में लगभग **8-10 प्रतिशत**, दलहनों में **30-35 प्रतिशत** तथा चोकर में **10-12 प्रतिशत पाच्य प्रोटीन** पाई जाती है।

दाने के अतिरिक्त प्रत्येक बकरी को प्रतिदिन लगभग **1 किलोग्राम हरा चारा** तथा इच्छानुसार सूखा चारा देना चाहिए। दाने की मात्रा निम्न प्रकार निर्धारित की जाती है–

- **शरीर के रख-रखाव हेतु** - 200-300 ग्राम
- **गर्भ की सुरक्षा हेतु** - 300-400 ग्राम
- **दूध उत्पादन हेतु** - प्रति किलोग्राम दूध उत्पादन पर 400-500 ग्राम

(1) जन्म से तीन माह तक के बच्चों की देखभाल

बच्चे के जन्म लेते ही सबसे पहले उसके शरीर पर लगी झिल्ली को हटाकर मुलायम एवं साफ कपड़े से पूरे शरीर की सफाई करनी चाहिए। विशेष रूप से नथुनों की अच्छी तरह सफाई करें, ताकि बच्चा आसानी से श्वास ले सके।

यदि बच्चे को साँस लेने में कठिनाई हो रही हो, तो उसे जमीन पर लिटाकर उसकी आगे की टाँगों को पकड़कर धीरे-धीरे ऊपर-नीचे करना चाहिए।

इसके बाद नाल को शरीर से जुड़े स्थान से लगभग **5 सेमी नीचे** साफ धागे से कसकर बाँध दें। बाँधे गए स्थान से लगभग **2 सेमी नीचे** किसी साफ एवं तेज ब्लेड या चाकू से नाल काटें तथा कटे हुए स्थान पर **टिंचर आयोडीन** लगाकर संक्रमण से बचाव करें।

(2) खीस (Colostrum) पिलाना

जन्म के तुरंत बाद बच्चे को खीस पिलाना अत्यंत आवश्यक है। साधारण दूध की अपेक्षा खीस में प्रोटीन की मात्रा लगभग **चार गुना अधिक** होती है।

खीस में उपस्थित **इम्यूनोग्लोब्युलिन (Immunoglobulin)** बच्चे के रक्त में अवशोषित होकर उसे विभिन्न रोगों के विरुद्ध प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करते हैं। साथ ही यह बाहरी वातावरण के प्रतिकूल प्रभावों से भी बच्चे की रक्षा करता है।

जन्म के बाद धीरे-धीरे बच्चे की आँतों की भीतरी झिल्ली कठोर होने लगती है, जिससे इम्यूनोग्लोब्युलिन का अवशोषण कम होता जाता है। लगभग **24 घंटे बाद** इसका अवशोषण लगभग समाप्त हो जाता है। इसलिए बच्चे को जन्म के बाद जितनी जल्दी संभव हो, खीस अवश्य पिलानी चाहिए।

बच्चे को उसके **शारीरिक भार के लगभग 1/10 भाग** के बराबर खीस देनी चाहिए। यह मात्रा दिनभर में **3-4 बराबर भागों** में पिलाना उचित रहता है। पहली बार खीस बच्चे के जन्म के **लगभग आधे घंटे के भीतर** पिला देनी चाहिए, क्योंकि समय बढ़ने के साथ इसकी उपयोगिता कम होती जाती है।

यदि किसी कारणवश बकरी से खीस उपलब्ध न हो, तो निम्नलिखित सामग्री को अच्छी तरह मिलाकर घोल तैयार करें तथा दिन में **3-4 बार** बच्चे को पिलाएँ–

सामग्री	**मात्रा**
मुर्गी का अण्डा	1
गुनगुना पानी	200 मि.ली.
सामान्य दूध	300 मि.ली.
अण्डे का तेल अथवा तरल पैराफिन	10 मि.ली.
विटामिन "ए"	10,000 अन्तर्राष्ट्रीय इकाई

भाग-2 : दूध पिलाना, चारा-दाना प्रबन्ध एवं बच्चों की पोषण व्यवस्था

(3) दूध पिलाना

बकरी के बच्चों को उनकी आयु एवं शरीर के भार के अनुसार उचित मात्रा में दूध देना चाहिए। दूध की मात्रा निम्नानुसार निर्धारित की जाती है–

आयु	**दूध की मात्रा**
प्रथम सप्ताह	शरीर भार का 10 प्रतिशत
1-2 सप्ताह	शरीर भार का 10-15 प्रतिशत

आयु	दूध की मात्रा
2-4 सप्ताह	शरीर भार का 12 प्रतिशत
4-8 सप्ताह	शरीर भार का 7 प्रतिशत
8-12 सप्ताह	शरीर भार का 3 प्रतिशत

दूध की मात्रा निर्धारित सीमा के अनुसार ही दी जानी चाहिए। आवश्यकता से अधिक या कम दूध देने से बच्चों के स्वास्थ्य एवं वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

(4) चारा-दाना प्रबन्ध

लगभग **15 दिन की आयु** से बच्चे चारा एवं दाना खाना प्रारम्भ कर देते हैं। प्रारम्भिक अवस्था में उन्हें पेड़-पौधों की कोमल एवं हरी पत्तियाँ तथा इच्छानुसार थोड़ा-थोड़ा दाना उपलब्ध कराना चाहिए।

बच्चों की बढ़ती आयु के साथ उनकी आवश्यकता के अनुसार दाना एवं चारे की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ाते रहना चाहिए।

यदि बच्चों को चरने के लिए बाहर भेजा जाता है, तो प्रातःकाल लगभग **2 घंटे तक** इच्छानुसार दाना खिलाना लाभदायक रहता है। इससे अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं।

दाने में लगभग **14-16 प्रतिशत पाच्य प्रोटीन** तथा **70-75 प्रतिशत कुल पाच्य पोषक तत्व (TDN)** होने चाहिए।

जिन हरे चारे में पानी की मात्रा अधिक हो, उन्हें सीमित मात्रा में ही खिलाना चाहिए।

जन्म से तीन माह तक के बच्चों हेतु दूध एवं दाने की दैनिक आवश्यकता

(क) अपेक्षित शारीरिक वृद्धि - 150 ग्राम प्रतिदिन

आयु	दूध की मात्रा	दाना (ग्राम/दिन)
जन्म से 15 दिन	शरीर भार का 10-15 प्रतिशत	–
15 दिन से 1 माह	शरीर भार का 12 प्रतिशत	70
1-2 माह	शरीर भार का 7 प्रतिशत	100
2-3 माह	शरीर भार का 3 प्रतिशत	200

(ख) अपेक्षित शारीरिक वृद्धि - 100 ग्राम प्रतिदिन

आयु	दूध की मात्रा	दाना (ग्राम/दिन)
जन्म से 15 दिन	शरीर भार का 10-15 प्रतिशत	–
15 दिन से 1 माह	शरीर भार का 12 प्रतिशत	50
1-2 माह	शरीर भार का 7 प्रतिशत	70
2-3 माह	शरीर भार का 3 प्रतिशत	120

(ग) अपेक्षित शारीरिक वृद्धि - 50 ग्राम प्रतिदिन

आयु	दूध की मात्रा	दाना (ग्राम/दिन)
जन्म से 15 दिन	शरीर भार का 10-15 प्रतिशत	–
15 दिन से 1 माह	शरीर भार का 12 प्रतिशत	20
1-2 माह	शरीर भार का 7 प्रतिशत	40
2-3 माह	शरीर भार का 3 प्रतिशत	70

उपरोक्त तालिकाओं के आधार पर बच्चों को उनकी वृद्धि दर एवं आयु के अनुसार दूध तथा दाने की मात्रा निर्धारित करनी चाहिए। उचित पोषण मिलने पर बच्चों की वृद्धि तेज होती है, उनका स्वास्थ्य बेहतर रहता है तथा भविष्य में वे अधिक उत्पादन क्षमता वाले पशु बनते हैं।

(5) तीन माह से 12 माह की आयु तक बच्चों का प्रबन्ध

जब बच्चे लगभग **तीन माह** के हो जाएँ, तब नर एवं मादा बच्चों को अलग-अलग रखकर पालन करना चाहिए। इस अवस्था के बाद दूध पिलाना बंद कर देना चाहिए तथा उनकी आवश्यकता के अनुसार दाना एवं चारा उपलब्ध कराना चाहिए।

इस आयु वर्ग के बच्चों को लगभग **3-4 किलोग्राम शुष्क पदार्थ प्रति 100 किलोग्राम शारीरिक भार** के अनुसार उपलब्ध कराया जाना चाहिए। यदि शरीर भार के लगभग **15 प्रतिशत** के बराबर दाना दिया जाए, तो उनके शरीर के रख-रखाव एवं सामान्य वृद्धि के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति हो जाती है।

दाने के अतिरिक्त प्रतिदिन **250-500 ग्राम हरा चारा** तथा इच्छानुसार सूखा चारा भी उपलब्ध कराना चाहिए। संतुलित आहार से बच्चों का शारीरिक विकास बेहतर होता है और वे भविष्य में स्वस्थ एवं अधिक उत्पादक पशु बनते हैं।

रोगों से बचाव

बकरी के बच्चों में सामान्यतः **निमोनिया, दस्त, आंत्रशोथ तथा काक्सीडियोसिस** प्रमुख रोग माने जाते हैं। यदि प्रारम्भ से ही उचित सावधानियाँ अपनाई जाएँ, तो इन रोगों की संभावना काफी कम की जा सकती है।

(क) निमोनिया से बचाव

निमोनिया से सुरक्षा के लिए बच्चों के रहने का स्थान सदैव साफ, सूखा तथा स्वच्छ होना चाहिए। फर्श पर सूखी एवं मुलायम घास की बिछावन का प्रयोग करना लाभदायक रहता है। इसके अतिरिक्त सीमित स्थान में आवश्यकता से अधिक बच्चों को नहीं रखना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक भीड़ भी निमोनिया होने का एक प्रमुख कारण बन सकती है।

(ख) दस्त (Diarrhoea) से बचाव

छोटे बच्चों में दस्त होने के अनेक कारण हो सकते हैं। प्रारम्भिक अवस्था में आवश्यकता से अधिक दूध पिलाने से भी दस्त की समस्या उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त **आंत्रशोथ** तथा **ई. कोलाई (E. coli)**

संक्रमण के कारण भी दस्त हो सकते हैं।

इस समस्या से बचने के लिए बच्चों को निर्धारित मात्रा में ही दूध देना चाहिए। साथ ही उनके रहने के स्थान, दाने तथा चारे की स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

(ग) काक्सीडियोसिस से बचाव

काक्सीडियोसिस का सबसे प्रमुख लक्षण भी दस्त ही होता है। इस रोग की रोकथाम के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे मिट्टी न खाएँ तथा उन्हें दूषित चारा अथवा दाना न दिया जाए।

प्रारम्भिक अवस्था में फर्श पर सूखी एवं मुलायम घास की बिछावन बिछाने से इस रोग की संभावना कम हो जाती है।

(घ) अन्य रोग

उपरोक्त रोगों के अतिरिक्त कभी-कभी बच्चों में **एन्थ्रेक्स** तथा **एण्टेरोटॉक्सीमिया** जैसे रोग भी देखने को मिलते हैं।

यदि किसी भी बच्चे में बीमारी के लक्षण दिखाई दें, तो बिना विलम्ब किए निकटतम **पशु चिकित्सक** से सम्पर्क करना चाहिए। स्वयं उपचार करने के बजाय विशेषज्ञ की सलाह लेना अधिक उचित रहता है।

इस प्रकार उचित पोषण, स्वच्छ वातावरण तथा समय पर रोगों की रोकथाम द्वारा बकरी के बच्चों की मृत्यु दर को कम किया जा सकता है तथा उनकी वृद्धि एवं उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय सुधार लाया जा सकता है।

आवास प्रबन्ध

बकरी के बच्चों के समुचित विकास एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिए उचित आवास व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है। यदि बच्चों को स्वच्छ, सूखा तथा आरामदायक वातावरण उपलब्ध कराया जाए तो उनकी वृद्धि बेहतर होती है और रोगों की संभावना भी काफी कम हो जाती है। इसलिए आवास बनाते समय निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए–

1. स्वच्छ एवं हवादार आवास

बच्चों का आवास सदैव साफ, स्वच्छ, हवादार तथा पर्याप्त प्रकाशयुक्त होना चाहिए। ऐसे स्थान पर आवास बनाना चाहिए जहाँ वर्षा का पानी जमा न हो तथा नमी कम रहे।

2. जन्म के बाद अलग बाड़े की व्यवस्था

जन्म के पश्चात लगभग **एक सप्ताह** तक बच्चों को उनकी माँ के साथ अलग बाड़े में रखना चाहिए। प्रत्येक बकरी एवं उसके बच्चे के लिए लगभग **1.2 से 1.5 वर्ग मीटर** क्षेत्रफल का अलग बाड़ा उपयुक्त माना जाता है।

इस प्रकार की व्यवस्था करने से बच्चे समय-समय पर आसानी से दूध पी सकते हैं तथा माँ और बच्चे के बीच पहचान भी अच्छी तरह विकसित हो जाती है।

3. फर्श एवं बिछावन की व्यवस्था

आवास को सदैव सूखा रखना चाहिए। यदि फर्श कच्चा हो तो समय-समय पर उसकी सफाई करते रहें तथा आवश्यकता अनुसार चूना एवं कीटाणुनाशक का प्रयोग करें।

यदि फर्श पक्का हो तो उसकी नियमित सफाई कर अच्छी तरह सूखने दें तथा उस पर सूखी घास अथवा अन्य

उपयुक्त बिछावन का प्रयोग करें, जिससे बच्चों को आराम मिले और नमी न रहे।

साथ ही आवास में समय-समय पर कीटाणुनाशक दवाओं का छिड़काव भी करते रहना चाहिए, जिससे रोगजनक जीवाणुओं एवं परजीवियों का नियंत्रण किया जा सके।

4. विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के लिए आवश्यक स्थान

बढ़ती आयु के साथ बच्चों को अधिक स्थान की आवश्यकता होती है। प्रति बच्चे के लिए निम्नलिखित स्थान उपयुक्त माना गया है–

आयु	प्रति बच्चे आवश्यक स्थान
जन्म से 3 माह	**0.2 से 0.5 वर्ग मीटर**
3-6 माह	**0.5 से 0.7 वर्ग मीटर**
6-12 माह	**0.7 से 1.0 वर्ग मीटर**

इसके अतिरिक्त खुला व्यायाम क्षेत्र (Open Yard) उपरोक्त स्थान का लगभग **दुगुना** होना चाहिए। इसी स्थान पर चारा एवं दाना खिलाने के उपकरण भी रखे जा सकते हैं। पर्याप्त खुले स्थान के कारण बच्चे आसानी से घूम-फिर सकते हैं तथा उनका शारीरिक विकास भी अच्छा होता है।

5. खुरों की देखभाल

समय-समय पर बच्चों के बढ़े हुए खुरों को काटते रहना चाहिए। यदि खुरों की नियमित कटाई नहीं की जाती, तो उनमें विकृति आ सकती है तथा पशु के लंगड़ाने की संभावना बढ़ जाती है।

निष्कर्ष

बकरी पालन एक लाभदायक व्यवसाय है, लेकिन इसकी सफलता काफी हद तक बकरी के बच्चों के वैज्ञानिक पालन-पोषण पर निर्भर करती है। जन्म के तुरंत बाद उचित देखभाल, समय पर खीस पिलाना, संतुलित आहार देना, स्वच्छ एवं सुरक्षित आवास उपलब्ध कराना तथा रोगों से बचाव के आवश्यक उपाय अपनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इन सभी वैज्ञानिक प्रबंधन विधियों का पालन किया जाए, तो बच्चों की मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है, उनकी वृद्धि दर बढ़ाई जा सकती है तथा भविष्य में वे स्वस्थ एवं अधिक उत्पादक पशु बनते हैं। परिणामस्वरूप बकरी पालन व्यवसाय अधिक लाभदायक और टिकाऊ सिद्ध होता है।